श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

सा विद्या या विमुक्तये — सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

C/o. शाह गोविन्दजी वीरम फेक्टरी कम्पाउन्ड, मोंढा रोड, औरंगाबाद (महा.) ४३१ ००१

सम्यग्ज्ञान प्रवेशिका

दिसम्बर - 2023

◆◆◆ अभ्यासक्रम जवाब पत्र ◆◆◆

ऐनरोलमेन्ट नंबर 7 शहर ____________

विद्यार्थी का नाम ____________

प्रश्न-१ रिक्त स्थान

(१)	वाणव्यंतर
(२)	कुसंस्कार
(३)	योनि
(४)	सात
(५)	पृथ्वीतल
(६)	सद्गुरु
(७)	संवर
(८)	मर्यादा
(९)	कलुषित
(१०)	पर्याप्ति
(११)	मरुदेवा
(१२)	ज्योतिष्क
(१३)	सामायिक
(१४)	कुगुरु
(१५)	अजरामर
(१६)	शुद्ध
(१७)	विरती
(१८)	हत्या
(१९)	नमोत्थुणं
(२०)	तप

प्रश्न-२ एक ही शब्द में

(१)	सुधर्मा
(२)	निश्चय
(३)	लोकान्तिक
(४)	उज्जयिनी
(५)	पवित्रता
(६)	हाथी
(७)	सोम
(८)	दया
(९)	इन्द्र
(१०)	उत्तरा फाल्गुनी
(११)	लज्जा
(१२)	आवक
(१३)	भवन
(१४)	अदत्तादान
(१५)	सारसिका दासी
(५)	पापवाला
(६)	साधक
(७)	जानना
(८)	उनके बाद
(९)	धर्म के
(१०)	एकत्व
(११)	सामायिक
(१२)	सूक्ष्म
(१३)	यथाख्यात
(१४)	ब्रह्मचर्य
(१५)	आश्रव
(१६)	प्रयत्न पूर्वक
(१७)	यति
(१८)	प्रथम
(१९)	काया द्वारा
(२०)	इसरा

प्रश्न-३ शब्दार्थ

(१)	असत्य बोलना
(२)	ज्योतिष
(३)	अनुपालन
(४)	और

प्रश्न-४ जोडियाँ लगाओ

(१)	6	(६)	7
(२)	4	(७)	3
(३)	8	(८)	2
(४)	10	(९)	1
(५)	9	(१०)	5

प्रश्न-५ संख्या में जवाब

(१)	17
(२)	14
(३)	15
(४)	10
(५)	7
(६)	5
(७)	162
(८)	42
(९)	18
(१०)	880

	प्रश्न-६ ✓ या ×		प्रश्न-७ यह वाक्य किस पृष्ठ पर
(१)	×	(१)	11
(२)	✓	(२)	7
(३)	×	(३)	2
(४)	×	(४)	18
(५)	✓	(५)	3
(६)	×	(६)	23
(७)	✓	(७)	17
(८)	×	(८)	5
(९)	✓	(९)	21
(१०)	×	(१०)	13

प्रश्न-१ मिले हुए गुण	+ प्रश्न-२ मिले हुए गुण	+ प्रश्न-३ मिले हुए गुण	+ प्रश्न-४ मिले हुए गुण	+ प्रश्न-५ मिले हुए गुण	+ प्रश्न-६ मिले हुए गुण	+ प्रश्न-७ मिले हुए गुण	+ प्रश्न-८ मिले हुए गुण	= कुल गुण

रीमार्क ____________ जांचनेवाले की सही ____________

प्रश्न - ८

१. जब चंद्र, सुर्यादि सब ग्रह उच्चस्थान में विद्यमान थे, सर्वत्र सौख्यभव, शांति और प्रकाश विकसित हो था, अंधकार नष्ट हो गया था, उल्कापात, रजोवृष्टि, धरतीकंप और दिग्दाह जैसे उपद्रवों का अत्यंत अभाव हो गया था ओ के अंत भाग तक विशुद्धि और निर्मलता हो गई थी। सब पक्षी अपनी मीठी मधुर वाणी से मानो जयजय का उच्चार कर रहे थे। दक्षिण दिशा का सुगंधी और शीतल पवन मंद मंद रीत से भूमि को स्पर्श कर रहा था सर्वप्रकार के धान्यादि फसल से पृथ्वी भरी हुई थी। सुकाल आरोग्यादि अनुकुल संयोगो से देशवासी लोगों के हर्ष से नाच रहे थे। वसंतोत्सवादी क्रीडा देशभर मे चलरही थी। ऐसे समय मे मध्यरात्री मे उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र मे चंद्र का योग प्राप्त होने पर त्रिशला रानी ने पुत्र को जन्म दिया। महावीर प्रभू का जन्म हुआ।

२. हे भगवंत! मैं समता का लाभरूप सामायिक करता हूँ, पापवाले व्यापार का त्याग करता हूँ, मैं जहाँ तक (सामायिक का) नियम का सेवन करता हूँ वहाँ तक दो प्रकार के करण (करना, करवाना) और तीन प्रकार के योग द्वारा, मन, वचन, काया द्वारा करूंगा नही, कराऊंगा नहीं (इसतरह छः प्रकार से) हे भगवंत! उस संबधी (पूर्व मे किए हुए) पाप से मैं वापिस फिरता हूँ, मैं मन से उसका पश्चाताप करता हूँ, गुरुसाक्षीसे प्रगट रूप से विशेषत: निंदा करता हूं। मेरी आत्मा को पाप से वोसिराता हूँ।

३. श्रावक का नौवा गुण है लज्जालू। लज्जावान धर्म का अधिकारी है। लज्जावान सदा निंदित कार्य से दूर रहता है। सदा सदाचार का आचरण करता है। लज्जावान अंगीकार किए हुए व्रत को कभी भी त्यागता नहीं है। इसलिए लज्जावान धर्म करने के लिए लायक एवं योग्य है। जहा लज्जा है वहाँ मर्यादा का पालन होता है। लज्जा सब सद्गुणों की माता है। लज्जा का स्वामी स्वयंमेव विषयवासना का गुलामी से मुक्त बन सद्गुणों के संस्कारो को मजबूत कर सच्चे धर्म को पाने की लायकता प्राप्त करता है।

४. तिर्यंग् जृंभक - तीर्थंकरादि पुण्यवानों के यहाँ धनधान्यादि वस्तुएं देने वाले वे दस प्रकार के है - १) अन्नजृंभगा २) पानजृंभगा ३) वस्त्रजृंभगा ४) घर (लयन) जृंभगा ५) पुष्प जृंभगा ६) फल जृंभगा ७) पुष्पफल जृंभगा ८) शयन जृंभगा ९) विद्या जृंभगा १०) अविय त जृंभगा।

५. एकत्व भावना :- जीव अकेला दुनिया मे आता है और अकेला कर्म बांधता है, अकेला ही कर्मका फल भोगता है, अकेलाही दुनिया से विदालेता है। इस दुनिया मे आकर मेरा मेरा कर के बहुत कुछ करता है, पर कुछ भी उसका होता नहीं है और जाता नहीं है, सब कुछ यहीं पडा रह जाता है। इसका चिंतन एकत्व भावना है।

अन्यत्व भावना :- मैं आत्मा हुँ, आत्मा देह से अलग है, घर परिवार, फर्निचर सब कुछ आत्मा से परे है, अन्य है। बाह्य सामग्री आत्मा से पर है। कोई किसी का नही ऐसी विचारणा, ऐसी चिंतन वह अन्यत्व भावना है।